Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –7, Jan.2013
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

हरि शंकर परसाई के रचनाओं में राजनितीक व्यंग्य

कल्पना मा. व्हसाले
हिन्दी विभाग प्रमुख, स्वा.रा.ती. महाविद्यालय,
अंबाजोगाई जि. बीड

प्रास्ताविक-

स्वातंत्र्योत्तर भारत की विभीन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक क्यारियों में विसंगीत का सडन, समूची भारत भूमि पर किसी रचनात्मक हरित क्रांतीके बीज नही उगा सकी साहित्यकार युग की आत्मा होता है और उसका लेखन युग की नीहा रिका। अनुभुति के थर्मामीटर से वह अपने जमाने की उपमा का नापता है उसकी कलम युग और इस समूचे माहौल की सच्चाइयों का दस्तावेज लिखती रहती है।

हरिशंकर परसाई आधुनिक हिन्दी व्यंग्य साहित्य के सर्वाधिक सशक्त व्यंग्यकार है स्वातंत्र्योत्तर युग मे कथ्य एवं शिल्प दोनो ही दृष्टि से हिन्दी व्यंग्य को एक निश्चित दिशा और एक नई पहचान प्रदान करने में उनका योगदान बडा महत्वपूर्ण रहा है। परसाई आज के व्यंग्य लेखन के जनक तो नहीं कहे जाएँगे, किन्तू भारतेन्दु के पश्चात निसन्देह वे ही ऐसे शायर है जिनका हिन्दी साहित्य ऋणी रहेगा।

उन्होने हर विषय पर कलम चलाई और बहूत ही बोल्ड होकर अपनी अस्वीकृती व्यक्त की अनके साथ सहमत होना या न होता एक बात हे किन्तु व्यंग्य को जिस भावभूमि पर उठाकर उन्होने शिल्प के नये नये प्रयोगो व्दारा जो साहित्य मे जगह दिलाई वह भुलाई नही जा सकती। आज हिन्दी की कोई भी पत्रिका व्यंग्य के स्तंभ के बिना नही है, हास्य व्यंग्य के क्षेत्र से बहीष्कृत नही है, किन्तु व्यंग्य अपने आप में ऐसी संज्ञा हे कि जिसे किसी भी विशेषण की आवश्यकता नही है हास्य व्यंग्य लिखते समय ऐसा प्रतीत होता है माने व्यंग्य का हास्य विशेषण है और वह उसकी शोभा बढा रहा है। व्यंग्य की एक स्वतंत्र सत्ता स्थापित हुई और साहित्य की सबसे ज्यादा तिलमिला देने वाली विधा साबित हुई।

स्वतंत्र्य भारत की चरम मुल्यहीन राजनीती पर खुला प्रहार उनकी रचनाओं का केंन्द्र रहा है। इस दिशा में उनकी उनके लेखकीय साहस प्रतिबदधता तटस्थता एवं दृष्टिगत सूक्ष्मत स्पष्टता के दर्शन हुए बिना नही रहते। उन्होने स्वंय यक स्वीकार करते हुए कि मेरा लेखन प्रमुख रुप से राजनितिक है, उन्होने अपने उपर 'अति राजनितिक' होने के आरोप का खण्डन करते हुए कहा है कि - "मेरा विश्वास है कि कोई लेखक राजनीतिक नही हो सकता क्योंकी राजनिती मनुष्य की नियति तय करती है। जो यह कहते है कि लेखक को राजनीति से क्या लेना -देना, वे खुद बडी गन्दी राजनीति पर

नावक के नुकीले तीर की तरह चोट करने मे अपनी सृजनात्मकता की सफलता सार्थकता का अनुभव करते है" अनेक राजनीति विषयक व्यंग्य मे एक प्रकार की करुणता और गम्भीरता होते हुए भी रोचकता कम नही होती।

प्रसंगानुरुप हास्य विनोद, वक्रोक्ति, अतिशयोक्ति, विरोधाभास, विट, १०० सार्डिटी, फैंटसी तथा प्रतिक आदि का सही प्रयोग कर वे कथ्य को चुटीला और मार्मिक बनाने की कला मे सिध्दहस्त है। राजनीति विषयक व्यंग्य के अन्तर्गत उनकी दृष्टि सबसे पहले भारतीय प्रजातन्त्र की अर्थहीनता की ओर गई है। पूँजीवादी षडयंत्र के शिकार प्रजातन्त्र की शल्य क्रिया बडी तेज-तर्रार भाषा मे वे बराबर करते रहे है। सत्ता के सुत्र मे आते ही देशी शासको ने देश को बरबाद करने मे किस प्रकार विदेशियों को भी मात कर इण्डिया का खाते रहे। देशी साहब बचे भारत को खाने लगे।

विदेशियो मे ट्रान्सफर ऑफ पावर-सत्ता का हस्तानतरण कहा। वास्तव मे ट्रान्सफर ऑफ डिश हुआ। परोसी थाली एक के सामने से दूसरे के सामने आ गई। वे देश को पश्चिमी सभ्यता के सलाद के साथ खाते थे और देशी सत्ताधारी जनतंत्र के अचार के साथ खाते है।

इस देश की राजनीति को सबसे ज्यादा भ्रष्ट किया अवसरवाद और दलबदल ने सिर्फ सत्ता के प्रति प्रतिबध्द नेतृत्व मगरमच्छा की तरह एक के बाद एक नीति-नियमो को निगलता गया राजनीति के इन कथित मर्दा की कलई परसाई जीने बडे कटु शब्दो मे इस प्रकार खोली है। ये मर्द उसी घर में बैठ जाते है, जो मंत्रिमंडल बनाने मे समर्थ हो। शादी इस पार्टी मे हुई थी, मगर मंत्रीमंडल दूसरी पार्टी वाला बनने लगा तो उसी की बहु बन गये। राजनीति के मर्दाने ने वेश्याओं को मात कर दिया। किसी ने तो घंटे भर मे तीन खसम बदल डाले। दलबदल के इस गिरगिटी खेल की कैफियत 'हम बिहार से चुनाव लड रहे है' मे एक नेताजी के मुख से इस प्रकार दी गई है। 'हर आदमी मे मेरे जैसी फुरती नही है। देख्एि न, मैने जनता पार्टी बनाई फिर मै स्वतंत्र पार्टी मे चला गया। फिर कॉंग्रेस मे लौट गया। मेरे लिए राजनीतिक दल एक अण्डरविअर है। ज्यादा दिन एक ही का नही पहनता, क्योंकि बदबु आने लगती है।' अण्डरवियर शब्द मे व्यंग्य का तीखापन सिमटकर वस्तुस्थिति के घृणित यथार्थ का पर्दाफाश कर देता है।

दलबदल की राजनीति ने भ्रष्टाचार के दानव को पाला-पोसा। जिनके पास बंगले है, कारे है, गहने है, पैसा है, उनकी पत्नीयाँ जब अपनी आबरु की वृध्दि के लिए धर मे कोई और बढिया चीज लाने की फरमाईश करती है तो पति महोदय तपाक से बोल उठते है - "अच्छा इस बार लोकसभा धर मे ले आउँगा।" जवाब मे पत्नी उत्साह से कह उठती है "हॉ, जरुर ले आओ। हम उसे फ्रिज मे रख देंगे। मिसेज चोपडा का घमंड टूट जाएगा। मै उससे कहुँगी -चोपडा साहब से कहकर विधान सभा ही बुलवा लें। क्यों ?" कितने मे आ जाएगी लोकसभा ? पति बोला - "लेना है सो दाम की क्या चिन्ता ? पहले सस्ती आती थी। अब कीमत कुछ बड गई है।" संवाद की सरस शैली मे चुनाव खेल की असीलयत जिस मार्मिक भाषा व्दारा सामने आती है, वह परसाई के व्यंग्य-शिल्प की अपनी एक खास लाक्षणिकता है। लोकसभा तो क्या सारे देश को जो 'फ्रिज' मे रखे हुए है, ऐसे मुठ्ठी भर लोग हर रोज जश्न मना रहे है, जनता को रोटी के बदले भाषण पर भाषण पिलाए जा रहे है। भाषणबाजी ही मानो सबसे बडी जवाँमर्दो का प्रतिक बन गई है। प्रजातंत्र की इस कलंक कथा की कटु अभिव्यक्त निम्न शब्दों मे हुई है - "जितने उपदेश और भाषण इस देश का नेता देता है, उतने किसी देश के नेता नही और हर विषय पर १२५ सालो से रोटी की जगह भाषण मिल रहा है। लोगो का हाजमा खराब हो गया है। दिमाग कै करने लगा है।"

इस प्रकार भारतीय राजनीति मे भाषण और भ्रष्टाचार ही ईश्वर बन गया है और निरीह प्रजा उसके सामने अपनी बलि चढाती रही है।

भारत की राजनीतिक विसंगतियो का चित्रण लेखक ने बडी तटस्थता-सतर्कता और निर्भीकता से किया है। विसंगतियों के साथ वे कही भी समझौता नही करते, कागज की लेखी नही किन्तु आखन की देखी कहते है, और इस प्रकार कहते है कि कोई भी उनके व्यंग्य से साबत नही बच पाता। यथार्थ को वे सहलाते नही उसकी शल्य क्रिया करते है, चीरफाड करते है। अपना हो या पराया, मित्र हो या शत्रु किसी को नही बक्शते। इस दृष्टि से उनको व्यंग्य कठोर और कटु अवश्य है। सत्य और न्याय के समय साजिश करने वाली हर शक्ति पर वह वज्र बनकर टुट पडता है।

ऐसे व्यंग्य परिचय समय-समय पर उभरते रहे है। लेकिन प्रथम महायुध्द के बाद हिन्दी साहित्य मे व्यंग्य कम तेवर, उसका स्वर, इस दिशा मे दूर तक व्याप्त होता रहा। समसामायिक परिस्थितियों ने अनेक व्यंग्यकारो की विडम्बनाओ के बीभत्स रुप को इस कदर प्रस्तुत करा दिया ाकि उनके लिए मोह भंग उस स्थिति मे पडजाना नियति बन गया वहॅ हास अपनी तमाम कोमलता खोकर जुगुप्सा के निर्माण स्त्रोत में बदल उठा। उसने हिन्दी साहित्य मे प्रथम बर अपनी अस्मिता की पहचान की। भारतेन्दु युग के व्यंग्यकारो ने कभी सोचा भी नही होगा की व्यंग्य 'हास्य' से जुदा अपने अलग अस्तित्व की माँग कर सकता है। पर स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य लेखन को हास्य-लेखन को निरर्थक करार दिया ओर अपने अलग अस्तित्व की पुकर की। इसी बदले माहौल मे परसाई ने घोषणा की कि मै सुधार के लिए बदलने के लिए लिखना चाहता हुॅ। धर्म एक नशा है। किसी ने कहा है। सच मानिए, कहनेवाला निश्चत्य ही अबतक जिन्दा नही है। धर्म तो 'चोखा' व्यापार है। पान-तम्बाकु के धन्दे से कही ज्यादा चमत्कृत। धर्म और अध्यात्म के नाम पर भारत मे मिट्टी भी सोने के दाम बिकती है। यहाँ तो 'टार्च' बेचे जाते है ताकि लोग टार्च के प्रकाश में देखकर चल सके। आप भी अपने शहर क आजु-बाजु टार्च बेचने वालो के दर्शन कर सकते है। जब आप जाओगे तो वह जरुर कहता हुआ मिलेगा - "आजकल सब जगह अँधेरा छाया रहता है, राते बेहद काली होती है, अपना हाथ ही नही सुझता आदमी को रास्ता नही दिखता। वह भटक जाता है, उसके पाँव काँटोसे बिंध जाते है, वह गिरता है और उसके धुटने लहुलुहाने हो जाते है।"

"जिस देश मे जायज काम भी न हो सके उसमे सारे काम ही नाजायज है। उनके लिए सोर्स चाहिए। इतनी सोर्स प्रेमी जाति दुनिया मे कोई नही है।"

राजनीति बडी गन्दी चीज है। 'जनतंत्र' और भेडतंत्र मे फरक समझने की जरुरत है। 'जनतंत्र' मे जनभावना का आदर अपेक्षित है।

लोगों ने सोचा था कि आजादी मिलने के बाद नयी रोशनी होगी नयी चेतना, नयी स्फुर्ती मिलेगी पर वह आजादी कुछ मुठ्ठी भर लोगों के हाथचली गई जिन्दगी जहॉ जीवित है, वहाँ गहन कोहरा छाया हुआ है अभावों का। आज के रानीतिज्ञ अपने-अपने स्वार्थी मे लगे है। वह बडा धिनौना है। साहब बोले -"आप वैरागी है। दफ्तरो के रीतिरिवाज को नही जानते। असल मे भोलाराम से गलती की। भई यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान पुण्य करना पडता है। आप की दरख्वास्ते उड रही है, उन पर वजन रखिए।" वजन रखिए शब्द पर घुसखोरी के लिए व्यंग्य है।

राजनीति पर व्यंग्य :

राजनीति मे परसाई का व्यंग्य बडी तीव्रता से प्रहार करता है। आज के युग में राजनीतिज्ञ किस तरह से अपनी चाल बदलकर आपने को बडा बना लेते है। परसाई ने लिखा है। (निढल्ले की डायरी) सियार ने भेडीये का हाथा चुमकर कहा, बडे भोले है आप सरकार। और मालिक, रुप रंग बदल देने से तो, सुना है आदमी तक बदल जाते है फिर ये तो सियार है।"

'भेडे और भेडिये' कहानी के माध्यम से परसाई ने जो व्यंग्य लिखा है उससे यह पता लगता है कि वोट मे विजयी होने के लिए अपना रुप-चाल ढाल आज के नेता किस प्रकार बल देते है। हर भेडिये के असपास दो-चार सियार रहते ही है।

'सदाचार का ताबीज' कहानी मे वर्तमान सरकारी व्यवस्था के सर्वव्यापी भ्रष्टाचार पर प्रखर व्यंग्य है। प्रचारीत -प्रसारित घोषणाओं का आज बोलबाला है। भ्रष्टाचार का फैलाव इतना आधिक हुआ है कि उससे अछुता रहना मुश्किल हो गया है। कहानी के राजा ने जब विशेषज्ञो के व्दारा भ्रष्टाचार को खोजने और हटाने का प्रयास आरंभ किया तब पता लगा कि सिहांसन भ्रष्टाचार का पहला शिकार है। कन्दशवासी साधु क व्दारा निर्मित एक सदाचार का ताबीज हर एक सरकारी कर्मचारी की भुजा पर बाँधने का निर्णय लिया गया।

परिणाम यह हुआ कि सदाचार के ताबीज से भ्रष्टाचार नष्ट नही हुआ बल्कि उसकी जडे और दृष्ढ हो गयी ।

नेताओ के स्वार्थोवृत्तीपर व्यंग्य :

'ढिढुरता हुआ गणतंत्र' नामक रचन मे परसाईजी ने वर्तमान परिस्थिति, नेताओं में बढी संडाध, आज की राजनैतिक स्थिति, नेताओ के व्दारा दिये गये झुटे वादे और गणतंत्र दिवस पर होनेवाले झुठे दिखावे और समाजवाद की दुहाई देनेवाले राजनीतिक दल व नेताओ की तथा लालफिताशाही एवं अपुसख्याही की खुब खबर ली है। लेखक कहते है। "स्वतंत्रता-दिवस भीगता है और गणतंत्र दिवस ढिढुरता है। प्रधानमंत्री किसी विदेशी मेहमान के साथ खुली गाडी मे निकलते है। रेडीओ टिपणीकार कहता है। घोर करतल ध्वनी हो रही है लेकिन हम नही बजा रहे है, फिर भी तालियाँ बज रही है। मैदान मे जमीन पर बैठे वे लोग बजा रहे है। जिनके पास हाथ गरमाने के लिए कोट नही है। लगता है, गणतन्त्र ढिढुरते हुए हाथो की तालियों पर टिका है। गणतन्त्र को उन्ही हाथो की ताली मिलती है, जिनके मालिक के पास हाथो को छिपाने के लिए गर्म कपडा नही है। हर साल घोषणा की जाती है कि समाजवाद आ रहा है। पर अभी तक नही आया। कहाँ अटक गया ? लगभग सभी दल समाजवाद लाने का दावा करते है, लेकिन वह नही आ रहा।"

चुनाव के खोख्खलेपन पर दिनकर सोनवलकर से एक नेता के सुर से सुर मिला या है-

"मतदाता -बन्धुओ,

सिर्फ एक बार और

मुझको चुना,

चाहे फिर छातियाँ पीटो

चाहे सिर धुनो।"

हरिशंकर परसाई का व्यंग्यकार अपने युग के प्रति बडा सचेत रहा है। उसने वर्तमान जीवन मे निहित विकृतियों को जहाँ कही भी देखा, अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है।

परसाई के व्यंग्यों की विचार भूमी बडी ठोंस प्रामाणिक और व्यापक है जिस पर कही भी व्यक्तिगत आरोप या उठा-पटक की गुंजाइश नही है। बौध्दिक एवं मानसिक दृष्टी से उनमे एक प्रौढता है। उनके देशो में निश्चैयक्तिकता है जिससे वे समांतर तीक्ष्ण से तीष्णवर स्तर होते जाते है। इनमे व्यंग्यकारो की तरह सीमितता नही, प्रभावात्मक एकान्त है विस्तार है गहराई है। छिछोरेपन या नोकं-झोंक छीटाकंशी जैसा सतहीनपन कतई नही है। स्वतंत्रता के बाद की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन की सही तस्वीर है परसाई के व्यंग्य। ठीक उसी प्रकार जैसे आजादी के पुर्व प्रेमचन्द का लेखन है।

"निठल्ले की डायरी" मे रिश्वतखोर सरकारी अधिकारियों का भंडाफोड, उसकी पोल को खोल पर्दा फाश करते हुए बराबर उधेडो है - "गाली वही दे सकता है जो रोटी खाता है। पैसा खाने वाला सबसे डरता है। सरकारी कर्मचारी जितना नम्र होता है वह उतने ही पैसे खाता है।" ढिढुरता हुआ गणतंत्र संग्रह मे हम बिहार मे चुनाव लडते रहे है, - देश मे चुनाव लडना, आम जनता की सेवा के नाम पर भोली जनता को छालना, खोखलापन ओर सफेद झुठ व्यंग्य कटाक्ष किया है।

भुख्रमरी और भ्रष्टाचार पर व्यंग्य :

'पगडंडिओ का जमाना' में भुख्रमरी और भ्रष्टाचार हमारे राष्ट्रीय चरित्र के सबसे ताकतवर तत्व बन गये है। पंजाब का गेहुँ गुजरात के काला-बाजार मे बिकता है और मध्य प्रदेश का चावल कलकत्ता के मुनाफाखोर के गोदाम मे भरा है। देश एक है। कानपुर का ठग मदुराई मे ठगी करता है, हिन्दी भाषी जेबकतरा तमिलभाषी की जेब काटता है और रामश्वर का भक्त बद्रीनाथ का सोना चुराने चल पडा है। .....

मुनाफाखोरो, कालाबाजारियो, भ्रष्टाचारियो ने मिलकर राष्ट्र की सम्पुर्ण राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, वैयक्तिक एवं सामूहिक दुर्बलताओं और नष्ट होने वाले महान मूल्यो की पीडा को स्वर देने की ईमानदार कोशिश परसाई जी के व्यंग्य लेखने मे विद्यमान है।" वर्तमान भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता पर 'पगडण्डियो का जमाना' नामक व्यंग्य लेख मे परसाईजी जमकर व्यंग्यात्मक प्रहार करते है। सफलता के महल का सामने का आम दरवाजा बन्द हो गया है। कई लोग भीतर घुस गये है और उन्होने कुण्डी लगा दी है। जिसे उसमे घुसना है, वह रुमाल नाक पर रखकर नाबादान मे से घुस जाता है। आसपास सुगन्धित रुमालो की दुकाने लगी है। लोग रुमाल खरीदकर उसे नाक पर रखकर नाबदान मे से घुस रहे है।

परसाईजी की रचनाएँ ऐसे भ्रष्टाचारियों के मुखौटे उतारती है। गांधीजी तथा जवाहरलालजी का नाम लेकर लूट-खसोट करते है। अपने को आज का काँग्रेसी कहकर वोट बटोरते है। आजीवन कुर्सियों और पदो से चिपके रहते है तथा जात बिरादरी के नाम पर चुनाव जीतते है। उनका व्यंग्य लेख राजनीति का बखिया अधरेता हुआ, उसकी पोल खोलता हुआ सच्चाईयो और विसंगतियो का प्रत्यक्ष रुप मे प्रहार का निशाना बनाता चला है। 'सज्जन, दुर्जन और काँग्रेसजन' नामक लेख मे परसाईजी कहते है - मैने कहा, "आप बताइये कि हमने तटस्थ विदेश नीति क्यों अपनाई और उससे हमे कौन से फायदे हुए?" झटके से उठे और तकिये पर खडे हो गये।

दोनो भुजाएँ उठाकर बडे जोर से चिल्लाएँ, "महात्मा गांधी की जय ! पण्डित नेहरु की जय! दुसरा सवाल पुछिए ! दुसरा सवाल था, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगो का राष्ट्र के विकास मे क्या महत्व है और अब तक की उपलब्धियाँ और भविष्य की आशाएँ क्या है? वे फिर सोचने लगे सोचते - सोचते उठे और कूदकर टेबिल पर चढ गये। हाथ उँचे करके फिर आवाज लगाई, पंडित नेहरु जिंदाबाद।"

परसाई के व्यंग्य भ्रष्टाचार, नकारापन, व्युरोक्रेसी पुलिस, तक ही सीमित नही रहते वरना इनके मूल मे कार्य कर रही छदाम राजनीती का भी विरोध करते है। राजनीति पर व्यंग्य करते समय वे आपने आपको वामपंभी विचारधारा से जोडते है। परसाई अपनी रचनाओं मे दक्षिणा पंथी राजनीति पर लगातार चोट करते है। 'कबिरा खडा बाजार मे और' यह माजरा क्या है स्तम्भो मे प्रकाशित व्यंग्य, राजनीति को आधार बनाकर ही लिखे गए है। इन स्तंभो मे हरिशंकर परसाई भारतीय राजनीति, भारतीय राजनीति का अंतरराष्ट्रीय राजनीति से सम्बन्ध और विषमताप्रद स्थितियों, मुल्यो सन्दर्भो का सामने लाते है।

एक जगह पर हरिशंकर परसाई लिखते है कि मुनाफाखोरो, कालाबाजारिये, भ्रष्टाचारियो ने मिलकर शवद्र को एक कर दिया है। सुन्दर सपनेवाले रविंद्रनाथ की उल्लासमयी जिज्ञासा थी कि ये हिन्दु, मुसलमान पारसी और ईसाई सब किसके आवाहन पर भारत महामानव सागर मे एकत्र हो गए है ? मै पुछता हूँ, कवि, वे तो ठिक आए, मगर ये सब जातियों के लूच्चे किसके आवाहनसे इधर आ गए ?

एक मन्त्री ने अभी कहा है कि यदि गरीबी और भुखमरी है, तो इतने लोग सिनेमा क्या देखते है। उन्हे नही मालुम कि भोजन से सिनेमा सस्ता पडता है। एक बार के साधारण भोजन मे जितना लगता है, उससे आधे दाम मे सिनेमा देखा जा सकता है। मन खुश होता है और तीन घण्टे भुख भाग जाती है। आदमी एक खाना छोडकर सिनेमा क्या न देखे ?

मेरा एक मित्र सही कहता है - 'परसाई, तुम पर भीड हावी है। तुम हमेशा भीड की बात भीउ के लिए लिखते हो। देखते नही, अच्छे लखको की सबसे बडी चिन्ता यह है कि भीड के दबाव से कैसे बचा जाए।'

उधर भीड कहती है कि कोई हमे इनसे बचाओ राजनीति की बु आती हे, इन बातो से

लेखक को तो मनुष्य से मतलब है, राजनीति वगैरेह से क्या ? मगर मनुष्य नियति तय करनेवाली एक राजनीति भी है।

एक कार्यक्रम मे एक पार्टी के नेता आगजी ने भारत के राजनीतिक भविष्य का नक्शा मेरे सामने खोल कर रख दिया था। लेखक को उनके और उनकी पार्टी के बारे मे थोडी जानकारी चाहिए थी।

उन्होने पुछा, "आगजी, आपने काँग्रेस क्यों छोडी"

वे बोले, "सैध्दांतिक मतभेद के कारण, मै सिध्दांत का पक्का आदमी हूँ। सिध्दांत को त्याग कर मै किसी दल मे नही रह सकता।"

मैने कहा, "सैध्दांतिक मतभेद को जरा और स्पष्ट करके समझाइए।"

उन्होने बताया, "सन १९५२ की बात है। पहला आम चुनाव होनेवाला था उस समय काँग्रेस का टिकट मुझे न देकर मेरे प्रतिस्पर्धी मोहनलाल को दे दिया गया। बस, मेरा सैध्दांतिक मतभेद हो गया और काँग्रेस छोड दी। सिध्दांत का पक्का हूँ मै तभी समाजवाद के नेताओं ने कहा कि हम १९५२ मे

सरकार बनाएँगे, जिसे आना हो तो आजाओ। मै उनकी पार्टी मे चला गया। भई जो सरकार बनाने वाला हो, उसके साथ रहना चाहिए। इसके बाद का दुर्भाग्य आपको मालुम है।"

आज के जीवन का रुप ही इतना उलटा, कुटिल, जटिल, वक्रात्मक और विद्रुप हो गया है कि उनकी यथार्थ एवं सफल अभिव्यंजना के लिए इन्हे लोकप्रसिध्द कथा सुत्रो एव पात्रो को स्वीकारना पड रहा है और सो भी उन महान एवं उठात्ता पात्रों के सकृती को विकृत करके।

परसाईजी की व्यंग्य - दृष्टि उनकी कहानियों और निबन्धो मे समान रुप से सक्रिय रही है किन्तु निबंधो मे उनका व्यंग्यकार अधिक शसक्त दिखलाई पडता है। 'बेईमानी की परत' नामक निबंध मे व स्वंय कहते है की, - "कहानी के साथ ही मै शुरु से निबंध भी लिखता रहा हूँ। और यह विधा अपनी प्रकृतिगत स्वच्छन्दता एवं व्यापकता के कारण मुझे बहुत अनुकुल भी प्रतित हुई है।" परसाई जी की व्यंग्य चेतना स्वातंन्त्र्योत्तर भारतीय परिवेश की अनेकविध विसंगतियो की देन है। उनका रचनाकार अपने युग के समग्र यथार्थ के आकलन के प्रति पुर्णत: सजग है, किन्तु फिर भी इस हकीकत को नजर अंदाज नही किया जा सकता कि स्वतंत्र भारत की चरम मुल्यहीन राजनीति पर खुला प्रहार उनकी रचनाओं का केन्द्र रहा है। इस दिशा मे उनके लेखकीय साहस, प्रतिबध्दता, तटस्थता, एवं दृष्टिगत सुक्ष्मता - स्पष्टता के दर्शन हुए बिना नही रहते।

किसी देश की संसद मे एक दिन बडी हलचल मची। हलचल का कारण कोई राजनीतिक समस्या नही थी, बल्कि यह था कि एक मन्त्री का अचानक मुण्डन हो गया था। कलतक उनके सिरपर लम्बे घुँधराले बाल थे, मगर रात मे उनका अचानक मुण्डन हो गया था।

सदस्यों मे कानाफुसी हो रही थी कि इन्हे क्या हो गया है। अटकले लगने लगी। किसीने कहा, "शायद सिर मे जुँ हो गयी हो।" दुसरे ने कहा, "शायद दिमाग मे विचार भरने के लिए बालो का परदा अलग कर दिया हो।" किसी और ने कहा - "शायद इनके परिवार मे किसीकी मौत हो गयी हो।" परवे पहले की तरह प्रसन्न लग रहे थे। इस प्रकार परसाईजी ने 'सदाचार का ताबीज मे विनोदी भाषा शैली मे राजनीतिको का वर्णन किया है।'

कई व्यंग्यकार अपराध को नष्ट करने और मुर्खताओं का उपहास करने की मानसिकता से व्यंग्यशास्त्र का इस्तेमाल करने मे प्रवृत्त होते है ताकि समाज का कल्याण हो सके। मनोवैज्ञानिक रुप से ये लेखक बुराई के प्रति निरंतर विद्रोह - भाव से जुझते रहते है। ड्राइटन ने इसलिए कहा था कि - "सुधार व्दारा बुराई को दुर करना व्यंग्य का प्रयोजन है। व्यंग्यकार जिसपर व्यंग्यकरता है उसका दुस्मन नही होता वरना, जिस प्रकार एक चिकित्सक रोगी का कुछ औषध देकर उसे स्वस्थ बनाता है, उसी प्रकार व्यंग्यकार भी व्यक्ति या समाज का सुधार करता है।"

कहा जाता है कि इब्सन अपनी मेज पर डिब्बे मे एक बिच्छु रखता था और उसमे सेव के कुछ टुकडे डाल दिया करता था। जब बिच्छु उन टुकडो पर डंक मारता था तो इब्सन को बडा आनंद मिलता था और लेखनी चलने लगती थी। व्यंग्यात्मक डंक मारने का भी १०३ 'थ्रिल' होता है, जो लेखक को निरंतर व्यंग्य लेखन की कठीण साधना मे प्रवृत्त किये रहता है।

प्रत्येक रचनाकार स्वतंत्र देश के गणतंत्र को देख रहा है, चाहे वह शरद जोशी हो, या नरेंद्र कोहली। परसाई को तो यह गणतंत्र ठिठुरता हुआ लगता है। जब गणतंत्र सिकुड रहा हो तो जरुरी है कि सुर्य की गरमाहट आये। पर सुरज तो कैद है, आये तो कहाँ से आये। परसाई का सुरज आजादी का है - दु:ख, विपदाओ को दुर करनेवाला - जिसकी प्रतीक्षा इस युग को बडी बेसब्री से है।

जरा परसाई के कथन पर गौर किजिए। यह आजका नेता बोल रहा है। "जरा धीरज रखिए। हम कोशिश मे लगे है कि सुरज बाहर आये। पर इतने बडे सुर्य को बाहर निकालना आसान नही है वक्त लगेगा। हमे सत्ता की कमसे कम सौ वर्ष तो दीजिए।"

संदर्भ ग्रंथ :

१) मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ / हरिशंकर परसाई

२) ठिठुरता हुआ गणतंत्र / हरिशंकर परसाई

३) अपनी अपनी बीमारी / हरिशंकर परसाई

४) हिन्दी साहित्य मे व्यंग्य / हरिशंकर परसाई